[NAGREE.]

जगत् का मुक्तिदाता प्रभु ईसामसीह की कथा।

THE HISTORY

OF THE

LORD JESUS CHRIST,

THE SAVIOUR OF THE WORLD.

IMPROVED FROM THE BENGALEE EDITION,
AND TRANSLATED INTO HINDUWEE,

BY REV. M. T. ADAM.

Calcutta:

THE BENARES AND CHUNAR TRACT ASSOCIATION,
AT THE BAPTIST MISSION PRESS, CIRCULAR ROAD.
1828.

Sept. 1828. 500 *Copies.*

जगत् का मुक्तिदाता प्रभु ईसामसीह
की कथा।

THE HISTORY

OF THE

LORD JESUS CHRIST,

THE SAVIOUR OF THE WORLD.

IMPROVED FROM THE BENGALEE EDITION,
AND TRANSLATED INTO HINDUWEE,

BY REV. M. T. ADAM.

Calcutta:

PRINTED FOR THE CALCUTTA CHRISTIAN TRACT AND BOOK SOCIETY,
AT THE BAPTIST MISSION PRESS, CIRCULAR ROAD.

1828.

THE ... OF THE

LORD JESUS CHRIST,

THE SAVIOUR OF THE ...

IMPROVED FROM THE ...

AND TRANSLATED INTO ...

By Rev. M. T. ADAM.

सूची पत्र।

प्रभु ईसा मसीह के अवतार होने के विषय में १
ईसा मसीह की जीव दशा १६
ईसा मसीह का उपदेश २०
प्रभु ईसा मसीह के भविष्यद्वाक्य २६
मसीह की आश्चर्य्यक्रियाओं के विषय में ३१
ईसा मसीह का दुःख का भोग ३५
मसीह को ऊंचे पदकी प्राप्ति ५१

श्चित्तमें बलिदान करे। जब सम्पूर्णता का समय आया तब ईसा मसीहने अवतार लिया और हम सबको ऐसा अतुल्य प्रेम प्रगट किया कि वह् हम् सबके पाप के भार अपने ऊपर उठा लिया और ईश्वर को अपने प्राण को प्रायश्चित्त में बलिदान किया॥ इस् प्रकार से वह् जगत् का मुक्तिदाता हुआ और उस्को छोड़के कोई मुक्ति दाता नहीं है। जो सब परिश्रम तुम्हारे देवतोंको पूजा कर्ने से तुम अपने ऊपर उठा लेते हो सो सब निष्फल है। तुम्हारा कल्याण उनके हाथ में नहीं है तो वे किस् प्रकार से तुम्हारा कल्याण कर सकते? सब लोगोंका कल्याण केवल ईश्वरके हाथ में है और जो तुम सब मुक्तिदाता प्रभु ईसा मसीह पर विश्वास नहीं लावें तो ईश्वर कर्के कल्याण कभी नहीं पा सकें। जो तुम् सब मुक्ति पावने को चाहो तो अवश्य है कि तुम् सब अपने देवतों की सेवाको छोड़ो इस् लिये कि उनसे ईश्वर बहुत् घृणा करता है और कुछ सहायता से तुम्हें नहीं कर सकते और अपनी आशा प्रभु ईसा मसीह में रखो "इस् लिये कि वह उन्हें जो उस् के द्वारा से ईश्वर के पास आवते हैं अन्त लों त्राण कर सकता है।" के लिये बन्धु लोगो इस बात को स्मरण करो जीवन काल थोड़ा है और अन्तकाल दूर नहीं और

तुम्हारे त्राण पावने का समय अब है इस् लिये विलम्ब मत् करो। प्रभु ईसा मसीह के चरित्र की कथा को यत्नसे पढो और विचारो; उस्में तुम अपनी आशा रखो और इस्में कुछ सन्देह नहीं है कि तुम सब उस्के द्वारा से निस्तार पाओगे।

यह सुनने के लिये मेरी बहुत बड़ी इच्छा है। इसी कारण महाराज अनुग्रह करके मुझ से कहिये कि मुक्तिदाता का जन्म किस ठिकाने में हुआ था।

गुरु। सुनो, यहूदियों के देश में बैतुलहम नाम करके एक नगर है उसी ठिकाने में उसका जन्म भया था।

चेला। महाराज यहूदी देश किस दिशा में है और वह हिन्दुस्थान से कितनी दूर होगा?

गुरु। तब सुनो चेला, उस का सब समाचार मैं तुम से कहता हूं। पहिले जिस काल में जल से पृथिवी डूब गई थी तब ईश्वर ने केवल एक वंश अर्थात् नूह की रक्षा किई थी। तिस के पीछे इस नूह का बेटा जिस का नाम शाम था, उस का [illegible] इस देश में आय के रहा, उस के बसने से वह देश उसीके नामसे प्रसिद्ध हुआ। इसी प्रकार से कितने काल बीत गया। पीछे इस वर्तमान के वंश में ईश्वर की आज्ञा के विरोध से सत्य ईश्वर को [illegible] बहुत लोग होके मूर्त्ति पूजा की चाल ग्रहण करी, इस में ईश्वर का क्रोध इस वर्तमान के वंशपर पड़ा। इसी लिये [illegible] नाम करके जो कुलमें एक ईश्वर की आराधना करता था उस के वंश के [illegible] वहां से निकाले गये। इस लिये [illegible] धर्म पुस्तकों में कहीं २ यिसराएल कहके [illegible] की बारह पुत्र थे, तिन के [illegible] सब [illegible], और इन में से एक यहूदा

सार लाता हूं जो सब लोगों के कारण बड़ा आनंद होगा। क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक मुक्तिदाता उत्पन्न हुआ जो मसीह प्रभु है। और तुम्हारे लिये यही पता है कि तुम उस बालक को वस्त्र में लपेटा और चरनी में पड़ा हुआ पाओगे। और तुरंत उस दूतके संग स्वर्गकी सेनाकी एक मंडली प्रगट हुई, और यह कहिके ईश्वर की स्तुति करने लगी। कि अत्यंत ऊंचे पर ईश्वर की जय और पृथिवी पर कुशल और मनुष्यों में मिलाप होये। और ऐसा हुआ कि जेउं दूत उनसे स्वर्गपर जातेरहे गड़ेरियों ने आपुस में कहा कि आओ अब बेतुलहम को चलें और इस बातको देखें जो हुई है जिसे ईश्वर ने हम पर प्रगट किई है। तब उन्होंने उतावली से आके मरियम और यूसफ को और उस बालक को चरनी में पड़ा हुआ पाया। और जब उन्होंने देखा तो उन बातोंको जो बालक के विषय में उनसे कही गई यों फैलाने लगे। और सबके सब जिन्होंने सुना उन बातों से जो गड़े-रियों ने उन्हें कही यों विस्मित हुवे।”

चेला। यह बड़ा आश्चर्य है कि गड़ेरियों पर ऐसी बड़ी दया हुई, परन्तु महाराज मङ्गल समाचार किस को कहते हैं?

गुरु। धर्म पुस्तक में मत्ती और मरकस और लूका और यूहन्ना इन चारों के रचित जो चार भाग वही मङ्गल समाचार करके प्रसिद्ध है। क्योंकि

व्यवस्था में लिखा है कि "हरएक पहिलौंठा नर जो गर्भ को खोलता है ईश्वर को भेंट किया जायगा।" उस काल में यह धर्मजन "आत्मा की शिक्षा से मंदिर में आया और जब माता पिता उस बालक ईसाको भीतर लाते थे कि उसके लिये व्यवस्थाके व्यवहार के समान करें। उसने उसको अपने हाथों में उठा लिया, और ईश्वर की स्तुति करके कहा, कि हे प्रभु अब तू अपने बचन के समान अपने दास को कुशल से बिदा किया चाहता है; क्योंकि मेरी आंखोंने तेरे निस्तार को देखा है। जिसे तूने सारे लोगों के सम्मुख सिद्ध किया है। एक ज्योति अन्य देशियों के उंजियाला करने को और तेरे इसराईल का बिभव॥" इसी प्रकार से धर्मात्मा का पर्वोक्त वाक्य सम्पूर्ण ऊआ।

चेला। गुरुजी तब मुक्तिदाता जो मनुष्य का अवतार ऊआ यह और देशके लोग किस प्रकार से जानने सके?

गुरु। सो चरित्र मैं कहता ऊं तू सुन। पूर्व देश के पंडित लोग ईश्वर से उपदेश पाय कर मनुष्यों का मुक्तिदाता जो बैतुल्लहम में अवतार ऊआ था उसको ढूंढ़ते ऊवे यहूदियः की राजधानी जो यिरोशलीम तहां आयके खड़े ऊवे जैसा मती रचित २ पर्व १, २ "अब हीरुदीस राजा के समय में यहूदियः के बैतुल्लहम में जब ईसा का जन्म ऊआ देखो पंडितों ने पूरब से यिरोशलीम में आके कहा। कि

यहूदियों का राजा जो उत्पन्न ऊआ सो कहां है क्योंकि हम ने पूरब में उसके तारे को देखा है और उसका दण्डवत् करने को आये हैं।

चेला। क्या महाराज, यहूदियः हीरदोस राजा के पिता का था?

गुरु। नहीं चेला सो नहीं वह यहूदियः देश के दो रूमी अध्यक्षों के द्वारा वहां के राज्य में अभिषिक्त ऊआ था।

चेला। कितने दिनों लग उसने राज्य किया था महाराज?

गुरु। प्राय ४० बरस लग उसने राज्य किया था पीछे वह ऐसा महापापी था कि ईश्वर के ठीक विचार के अनुसार से उसके सब शरीर कीड़ों से खाया गया और उसी व्याधि में वह मर गया।

चेला। तब महाराज मुक्तिदाता जन्म होने से इस राजा ने समाचार पाया था क्या नहीं?

गुरु। हाँ इस मुक्तिदाता के जन्म होने के पीछे पूर्व देशसे जो पण्डित लोग उसको खोजने को आये थे तिन्हों से वह इस समाचार को पाया कर अपने मन में बऊत चिन्ता से व्याकुल ऊआ।

चेला। भला महाराज वह इस में चिन्ता से क्योंकर ऊआ?

गुरु। इसका कारण यही है। ईश्वर ने यहूदियों से प्रतिज्ञा करके कहा था कि उनके अपने देश के राजा के वंश में एक पुत्र जन्म ले कर उस देशका

राजा होगा। और उस कर्के उसके बैरी लोगों के हाथ से वे उद्धार पावेंगे। पीछे इस मुक्तिदाता का जन्म जो बैसी ही राज वंश में ऊआ था यही सुन के हीरदीस राजा याकुल ऊआ।

चेला। तिसके पीछे महाराज हीरदीस राजाने इसके कारण क्या किया?

गुरु। जब "उस ने लोगों के सब प्रधान याजकों और अध्यापकों को एकट्ठे किया उसने उन से पूछा कि मसीह कहां उत्पन्न होगा? तब उन्होंने उसे कहा, यहूदियः के बैतुलहम में क्योंकि आगमज्ञानी ने ऐसा लिखा है। और हे यऊदा देश के बैतुलहम यहूदाके प्रधानों में तू सब से छोटा नहीं है क्योंकि तुझ से एक प्रधान निकलेगा जो मेरे इसराईल लोगों को चरावेगा।"

चेला। यह सुनके महाराज उसने क्या किया?

गुरु। यह सुनके "उसने पण्डितों को चुपके से बुलाके यतनसे उन्हें पूछा, कि तारा किस समय में दिखाई दिया। और उसने उन्हें बैतुलहम में भेजके कहा कि जाओ और यतन से बालक को ढूंढो और जब तुम उसे पाओ मुझ को संदेश पऊंचाओ कि मैं भी आ कर उसकी पूजा करूं। और राजा की सुन के वे चले गये और देखो वुह तारा जिसे उन्होंने पूरब में देखाथा उनके आगे आगे चला गया यहां- लों कि जहां वुह बालक था वहां आके ऊपर ठह- रा। और वे उस तारे को देखके अत्यंत आनंद-

से आनंदित हुए और जब वे घर में आये उन्होंने उस बालक को उसकी माता मरियम के संग देखा और नीचे गिरके उसकी पूजा किई और उन्होंने अपने धन को खोलके उसको सोना और लोबान और गंधरस भेट दिये।"

चेला। भला महाराज हीरूदीस राजाको इस का समाचार क्या पण्डित लोगोंने दिया था?

गुरु। नहीं दिया नहीं उलटा वे हीरूदीस के स्थानमें फेर नहीं गयें इसलिये कि ईश्वरसे स्वप्नमें उपदेशको पायकर दूसरे मार्गसे अपने देशको चले गये।

चेला। महाराज वे दूसरे मार्गसे किसलियें गये?

गुरु। ईश्वरने जानके कि राजाके मनमें ईसा-मसीह के मारने की इच्छा थी इसीलिये उसने उनको और पैंडेसे भेज दिया कि राजाके हाथ से उस को बचावे।

चेला। तब तो वह राजा बडा दुष्ट था महाराज जिसने ईसामसीह को मार डालने को मनमें किया था। जब पण्डित जो उसके पास फिरके नहीं आये उसने क्या किया?

गुरु। आहा चेला इसमें उसने अपने अन्तःकरण की दुष्टता बहुत सी प्रगट किई क्यों कि जिस समय में उसने पण्डितो से यतसे पूछा था उसी समय के अनुसार लोगोंको भेजकर दो बरस और उससे

छोटे जितने बालक बैतुलहम में और उसकी सब सिवाने में थे उन् सबको मार डाला।

चेला। हाय २ क्या महाराज उस्ने ईसामसीह को भी मार डाला?

गुरु। नहीं चेला वह ईश्वर के हटावने करके यह काम नहीं कर सका, धर्मपुस्तक की बात यहि है "कि देखो ईश्वर का दूत स्वप्नमें यूसफ का दर्शन देके बोला कि उठ और बालक को और उस्की माता को लेकर मिसर को भाग जा, और वहीं रह जब लों मैं तुझे संदेश न पहुंचाऊं क्योंकि हीरुदीस इस् बालक को नाश करनेके लिये ढूंढेगा। तब वुह उठके बालक और उस्की माताको लेकर रातेरात मिसर को चला गया।"

चेला। हे महाराज यह बात सुन कर मुझको बड़ा आल्हाद हुआ परन्तु मिसर देश कहां है?

गुरु। मिसर देश चेला हिन्दुस्थानसे पश्चिम प्राय २५०० क्रोश होगा। और यहूदियः देशके दक्षिण पश्चिम यिरोशलमसे ६० क्रोश होगा। इस मिसर देशका परिमाण यही लम्बा उत्तर दक्षिण ३०० क्रोश और चौड़ा पूर्व पश्चिम १०० क्रोश होगा।

चेला। भला महाराज, ईसा के माता पिता उसके साथ मिसर देशमें कित्ने दिन रहे थे?

गुरु। मैंने धर्म पुस्तक में पढ़ा है कि "जब हीरुदीस मर गया देखो ईश्वरके दूतने मिसर में यूसफ को स्वप्नमें दर्शन देके कहा! उठ और उस बालक

को और उसकी माताको लेकर इसराईल की भूमि में आ क्योंकि वे जो बालक के प्राण के लोभी थे मर गये। तब युसुफ उठके बालकको और उसकी माताको लेकर इसराईलकी भूमि में आया।" अब मैंने तुमको ईश्वर के पुत्रके अवतार होने का सारा विवरण कहा है।

दूसरा पर्व।

ईसामसीह की जीवदशा।

चेला। भला महाराज वह पृथ्वी में कितने दिन बचा था?

गुरु। वह प्राय तीस बरस तक गुप्त हो कर रहा था। तिस के पीछे वह यहूदियः देश में एक जन अध्यापक होके और ईश्वर का पुत्र कहाके प्रसिद्ध हुआ।

चेला। परन्तु जन्मावधि उन् का किसी बात में कुछ प्रकाश नहीं हुआ?

गुरु। हां सो कुछ प्रकाश हुआ है। मैं ने धर्म-पुस्तक में पढ़ा है कि वह बारह बरस की अवस्था में अपने माता पिता के साथ यिरोशलीम में गया था और वहां मन्दिर में जाय कर पण्डित लोगों के बीच में बैठ कर बात चीत किई। और जितने

लोगों ने उस् की बात सुनी वे सब लोग उस् की बुद्धि से और उत्तरन् से विस्मित हूवे।

चेला। यह बडे अचम्भे की बात है कि एक जना बारह बरस का बालक पण्डितों की बात का उत्तर प्रत्युत्तर कर्ने सके?

गुरु। हाँ चेला वह कि ईश्वर से हूआ है उसका एक यहभी प्रमाण है। सच २ वह जगत् का सिर्जनेहार है। तू ईसा को क्या जानता है?

चेला। मैं जानता हूं कि वह एक जना यथा योग्य अध्यापक था और उस् के विषय में बहुत प्रस्ताव सुनने को मेरी बहुत इच्छा है जो महाराज अनुग्रह कर्के कहैं तो मैं सुनूं।

गुरु। जब ईसा तीस बरस के लग भग होने लगा तब जलील से यर्दन् को स्नानकारक यूहन्ना के पास गया कि उस् से स्नान पावे।

चेला। महाराज किस् देश को जलील कहते हैं?

गुरु। यहूदियः देश के उत्तर जो भाग उसी को जलील कहते हैं। वह यिरोशलीम से ३५ कोश होगा वहां मुक्तिदाता ने मङ्गल समाचार का उपदेश किया और अनेक २ आश्चर्य क्रियाओं का भी प्रकाश किया था। तिस् लिये वह और उसके शिष्य धर्म पुस्तक में किसी २ ठिकाने में जलीली कहे जाते हैं।

चेला। भला महाराज यह तो मैं समझा परन्तु यूहन्ना कौन था?

गुरु। मुक्तिदाता की माता जो मरियम उसके कुटुम्ब के पुत्रका नामथा यूहन्ना वह प्रभुकी मार्ग को सुधराने के कारण ईश्वर से प्रेरित हुआ था। और जब मुक्तिदाता उसके पास आया तब वह मनुष्यों से बोला "कि देखो ईश्वरका मेम्ना जो जगत् के पाप को ले जाता हैं।"

चेला। भला महाराज जब मुक्तिदाता स्नान पाने के लिये यूहन्ना के पास आयाथा तब उसने मुक्तिदाता को क्या कहा?

गुरु। तब "उसने उसको बर्जा यही कहके कि मुझे तुझसे स्नान पावने का प्रयोजन हैं और क्या तू मेरे पास आता है।"

चेला। महाराज यह बात यूहन्ना ने किस लिये कही थी?

गुरु। उसका कारण मैं कहता हूं सुन। स्नान जो है सो एक व्यवस्था है जिसको ईश्वर ने ठहराया है। इसका गुण यही है कि इससे मनुष्य के अन्तःकरण में जो दुष्टता रहे सो प्रकाशित होय। और जो मनुष्य के अन्तःकरण की पवित्रता धर्मात्मा से आवश्यक है यहभी इस व्यवस्था करके प्रकाशित होय परन्तु कि मुक्तिदाता पापहीन और पवित्र था इस में कुछ सन्देह नहीं इसि लिये उसको भी इस व्यवस्था में कुछ भी प्रयोजन नहीं होने सकता इस कारण से युहन्ना ने यह बात उससे कही।

चेला। तब मुक्तिदाताने इसका क्या उत्तर दिया महाराज?

गुरु। उसने "उत्तर देके उसको कहा कि अब होही होने दे क्योंकि हमें यों सकल धर्म पूरा करने को चाहिये तब उसने उसे होने दिया। और ईसा स्नान पाके जोंहीं पानिसे ऊपर आया देखो उसके लिये स्वर्ग खुल गये और उसने ईश्वरके आत्मा को कबुतर के समान उतरते और अपने ऊपर ठहरते देखा। और देखा स्वर्ग से यह कहते हुए शब्द आया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिसमें मैं अति प्रसन्न हूं।"

चेला। महाराज मैं समझता हूं कि इसके द्वारा ईसामसीह की बडी बडाई हुई थी। जब ईश्वरने उसका ऐसा सन्मान किया और उस को अपना पुत्र करके कहा तब उचित है कि उस पर सब मनुष्य विश्वास लावें। परन्तु ईसा के ऊपर जो ईश्वरको आत्मा उतरके बैठी इसका भाव मैं नहीं समझ सका अनुग्रह करके मुझको समझाय दो।

गुरु। इसका अर्थ यही है कि ईसा आचार्य्य के काम में और याजक के काम में और राजाके काममें योग्य होवे इसीलिये उसके अभिषेक के कारण ईश्वरकी आत्मा उसके उपर उतर के बैठी तबसे उसका नाम मसीह अथवा ख्रीष्ट हुआ जिस शब्द-का अर्थ अरबी वा इब्री भाषा में अभिषिक्त को समझावे। हमने इसी प्रकार से ईश्वरके वाक्य से

आता है, "कि प्रभुका आत्मा मुझ पर है इस् कारण उसने मुझे अभिषेक किया कि मंगल समाचार कंगालोंको सुनाऊं उसने मुझे भेजा कि जिनके मन चूर हैं उन्हे चंगा करूं और बंधुओं को छोड़ाने को और अंधों को फेर दृष्टि पानेका संदेश सुनाऊं और टूटे मनोंका निस्तार करूं। और प्रभु के ग्रहण किये उए बरसका उपदेश करूं।

तीसरा पर्व।

ईसामसीह का उपदेश।

चेला। महाराज ईसा जो यथार्थ भविष्यत् का कहने हारा था तिस् में उसने क्या प्रकाश किया?

गुरु। जिस् प्रकार से हम् लोग निस्तार पावने सकें वही उस्ने प्रकाश किया है। और मुक्ति के विषय में मनुष्यों को जो उपदेश किया है उस्का स्थूल अर्थ इन्हीं के एक वातों में है "ईश्वर ने जगत् पर ऐसा प्रेम किया है कि उस्ने अपने एक लौता पुत्र दान दिया कि जो कोई उस् पर बिश्वास लावे नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे।"

चेला। इस् का अर्थ मैं भली प्रकार से नहीं समझने सका महाराज मुझ को समझाय दे।

गुरु। इस का यही अर्थ है ईश्वर का जो मनुष्य प्रेम यह उसने अपने पुत्र को प्रेरण करने में प्रकाश किया है। क्योंकि उसने पृथिवी पर अपने प्राण को मनुष्यों के पापों के कारण प्रायश्चित्त में दिया और जो कोई उस में विश्वास करेगा उसके पापों का मोचन पावेगा और सदा लों स्वर्ग में सुख से वास करेगा।

चेला। ईश्वर और उसकी आराधना के विषय में मुक्तिदाता ने मनुष्यों को कुछ उपदेश दिया था वा नहीं?

गुरु। हां उसने उनको उसके विषय में ऐसाही उपदेश किया था "कि सबसे पहिली आज्ञा यह है कि सुनो हे इसराईल परमेश्वर हमारा ईश्वर एक परमेश्वर है। और तू अपने समस्त अन्तःकरण से और अपने समस्त प्राणसे और अपने समस्त मनसे और अपने समस्त सामर्थ्य से प्रभुको जो तेरा ईश्वर है प्रेम कर यही पहिली आज्ञा है।" "समय आता है और अब है कि सच्चे पूजेरी आत्मा से और सचाईसे पिताकी सेवा करेंगे क्योंकि पिता ऐसे सेवकों को ढूंढता है। ईश्वर आत्मा है और जो उसकी सेवा करते हैं अवश्य है कि आत्मासे और सचाईसे सेवा करें।"

चेला। महाराज इसमें कैसे समझें मनुष्य सब इस उपदेश को मानते हैं वा नहीं?

गुरू। न चेला वे नहीं मानते हैं। क्योंकि ईश्वर से सोना रूपा इत्यादि संसार के वस्तुन को वे अधिक प्रेम कर्ते है। और वे यह किस्‌लिये कर्ते है इस्‌का भेद तू कह सक्‌ता है।

चेला। नहीं महाराज मै इस्‌का भेद कुछ भी नहीं जानता सो मुझ को कह?

गुरू। तव इस्‌का कारण मै कहूं सुन तू जाने है कि खारा सोता से मीठा जल कभी नहीं निक्‌ल्‌ता। इसी से मनुष्यका अन्तःकरण पापिष्ठ है किस्‌लिये उस्‌में कु कर्म को प्रवृत्ति के बिना सत्‌कर्म की प्रवृत्ति नहीं होती इस् कारण ईश्वर से संसार के वस्तुन को अधिक प्रेम कर्ने को उन्‌के अन्तःकरण में इच्छा होती है। और मनुष्यों का अन्तःकरण की दुष्टता भी जो मुक्तिदाताने उन्‌के लिये प्रगट किई है सो कहता हू सुन। "दुष्ट चिन्ता, हत्या, परस्त्री गमन, वेश्या गमन, चोरी, झुटी साक्षी, पाषण्डता, ये ही सब अन्तःकरण से बाहिर निकलते हैं और मनुष्य को अपवित्र कर्ते हैं।"

चेला। तव महाराज ईश्वर वा उस्‌की आराधना के विषय में मुक्तिदाता ने जो उपदेश कर्ने के लिये उन्‌को क्या कर्त्तव्य है?

गुरू। उन्‌को यही कर्तव्य है कि वे ईश्वरके समीप जाय कर भक्तिभाव से दृढ़ अन्तःकरण में

यही प्रार्थना करें कि उस्के बिरोधमें जो उनके अन्तःकरण में शत्रुता है उस्को वह दूर कर देके उन्के अन्तःकरण को फिरायके पवित्र करे। यह होनेसे उन्के अन्तःकरण में संसार के प्रेमसे ईश्वरके प्रेमको बढ़ती होगी। इसी रीतिसे वे सब मुक्तिदाताके उपदेश का पालन कर्ने सकें नहीं तो और किसी प्रकारसे नहीं होने सके। और जो मनुष्योंका अन्तःकरण ईश्वर के ओर नहीं फिरे तो उन्की मुक्ति नहीं हो सक्ती इस्के बिषय में मुक्तिदाता ने मनुष्यों को जिस् बात को कहके उपदेश किया था सो मैं कहता हू सुन। "मैं तुझ से सत्य २ कहता हू जो मनुष्य फेरके उत्पन्न नहो वे तो वुह ईश्वर का राज्य को नहीं देख सक्ता।" अर्थात् प्रापात्मा को उलट के धर्मात्मा से बिना हुवे मनुष्य स्वर्गमें नहीं जाने सक्ता।

चेला। भला महाराज यह तो मैं ने समझा परन्तु मनुष्य जो ईश्वर के बिरोध में पाप कर्त्ते हैं यह देख के मुक्तिदाता ने मनुष्यों को क्या आज्ञा किई?

गुरु। उस्ने मनुष्य को इस् प्रकार की आज्ञा किई कि जो तुम् सब पाप के कारण खेद और पश्चात्ताप न करो तो तुम सब नाश होओ गे। इसी से चेला मैं समझता हूं कि जो कोई पापके लिये यथार्थ खेद और पश्चात्ताप न करे उसके अन्तःकरण में पापके कारण बडीसे बडी पीडा जन्मेगी। और

वह पापका परित्याग करके ईश्वर के समीप में आय-कर उसकी यथार्थ आज्ञा का बजालाने हारा होगा। यह नहीं करने से उनको सारी नरक की यन्त्रणा भोग करने पड़ेगी।

चेला। इसमें मैं ने समझा कि मुक्तिदाता ने बहुत् उत्तम उपदेश किया था। परन्तु महाराज इस उपदेश को उसने किस प्रकारसे प्रगट किया है?

गुरु। उस्ने इसको गुप्तभाव से और प्रगटता से अपने साधु वाक्य वा प्रश्नोत्तर वा दृष्टान्त से प्रगट किया है।

चेला। दृष्टान्त से जो उपदेश करना यह पण्डितका काम है। इस लिये दृष्टान्त से उसने क्या अपना उपदेश प्रकाश किया है यह कहना चाहिये।

गुरु। उस्ने बहुत २ दृष्टान्तों से यह किया है। सो सब विस्तार करके जो मैं कहूं ऐसा तो मुझको अवकाश नहीं है परन्तु सो सब धर्मपुस्तक में लिखा है उसको पढ़ने से जानने सकेगा।

चेला। परन्त महाराज ये सब दृष्टान्त जिस् जिसने सुना वह वह उनके अर्थ को समझ ने सका क्या नहीं?

गुरु। न चेला वे सब अर्थ समझ ने नहीं सके। और उसके शिष्यों ने भी पहिले समझा नहीं। परन्तु पीछे उसने आपही उनको समझाय दिया।

चेला। ऐसा अनुग्रह जो उसने उन् शिष्यों पर किया था उन् सब शिष्योंका क्या क्या नाम है?

गुरु। उसके बहुत् शिष्य थे परन्तु उनके बीच में बारह को चुनके उनको प्रेरित के काम में स्थापित किया और उन्हें प्रेरित की पदवी भी दिई। उन बारह शिष्यों के नाम ये हैं पतरस और याकूब और यूहन्ना और अंद्रयास और फीलबूस और थुमा और बारसूलमा और मत्ती और हलफा का पुत्र याकूब और शमऊन जलन और यहूदा और याकूब का भाई यहूदा।

चेला। महाराज किस् लिये उसने इन् बारह शिष्यों को चुनके उनको प्रेरित का काम कर्ने को ठहराया?

गुरु। उसके मङ्गल समाचार को कि वे सर्व्वत्र प्रगट करें और मनुष्यों के बीच में उसके विषय में प्रमाण देवें। इसी लिये उसने उन्हों को प्रेरित का काम कर्नेको ठहराया।

चेला। इस् काम के योग्य किस् प्रकार से वे ज्ञये थे महाराज?

गुरु। वे इस् प्रकार से योग्य ज्ञये थे। मुक्ति-दाताके साथ प्राय तीन बरस रह कर उन्हों ने बज्जत २ उपदेशों को उससे सुना और उसकी बज्जत सी आश्चर्य्य क्रियाभी देखी तिस पर भी वह कभी २ उनके साथ और उनके कारण प्रार्थना कर्त्ता और वह उनको निराले में परमार्थ के बि-षयमें धर्म्म पुस्तक के अनुसार नाना प्रकार की

शिक्षा करी। और अनेक२ होनहार बातें भी उनके प्रगट करी था।

चौथा पर्व।

प्रभु ख्रीष्ट के भविष्यद्वाक्य।

चेला। महाराज उसने अपने शिष्यों के प्रति का भविष्यद्वाक्य प्रगट किया उसके सुनने को मेरी बड़ी वासना है इसी लिये महाराजके अनुग्रह करनेसे ही मेरी वासना पूरी होती है।

गुरु। भला चेला सोई होगी पहिले तुझको यही कर्तव्य है समझो कि भविष्यद्वाक्य ईश्वर के बिना दूसरे से नहीं होता। और मनुष्य से भी जो यह प्रगट होय सोभी ईश्वर की सहायता के बिना नहीं प्रगट करने सके। इसीलिये मुक्तिदाता जो वह आप ईश्वर होके अपनी शक्ति के द्वारा से उसने भविष्यद्वाक्य को प्रगट किया था।

चेला। भला महाराज जब सूर्य वा चन्द्रका जो ग्रहण होता है उसको ज्योतिषी लोग गणित करके ग्रहण होनेके पहिले कहते हैं। उसको आप भविष्यद्वाक्य कहते हो क्या नहीं?

गुरु। चेला वह भविष्यद्वाक्य नहीं है। इस कारण जो मनुष्य विद्यासे वा गणित से जानने सके

गुरु। हां चेला क्योंकि यह हम ने ठीक कहानी के द्वारा जाना है कि बहुतेरे कल्पित मसीहों ने आयकर बहुतेरों को छल दिया था और यहूदी लोगों पर बड़ी घोर विपत्ति पड़ी थी। और अटकल होय कि मसीह के मर्ने के ४० वरस के पीछे तितस् नाम कर्के एक रूमी सेनापति के द्वारा यह यिरोशलीम नगर पराजय हो कर नष्ट हो गया। इस् लड़ाई में तेरह लाख लोग अटकल से मारे पड़े हुयें थे और प्राय सत्तानवे सहस्र लोग पकड़े जाकर गुलाम की न्याईं बेचे गये और उस् दिन् से आज लग यिरोशलीम नगर और देश के लोगों के वश में रहा है। तब से यह सब मुक्तिदाता के भविष्यद्वाक्य के अनुसार से होता है क्योंकि उसने कहा है "कि वे अर्थात् यहूदी लोग तरवार के मुंह में पड़ेंगे और सब देश के लोगों में बन्धुए होवेंगे यिरोशलीम अन्य देशियों से रौंदा जायगा जबलों अन्य देशियों का समय पूरा होय।"

चेला। महाराज "जबलों अन्य देशियों का समय पूरा होय।" इसका अर्थ क्या कर्त्ते हो?

गुरु। इसका अर्थ यही है कि यहूदी देश के लोगों को छोड़के और २ सब देश के लोग इस ठिकाने में अन्य देशी लोग कहे जाते हैं। और जब वे अपने शास्त्रके अनुसार से देवतों की पूजा को परित्याग कर्के और सच्चे ईश्वर की आराधना कर्के

ईसा मसीह मुक्तिदाता के मतावलम्बी होंगे तब उनका पमर्व सम्पूर्ण होगा।

चेला। परन्तु महाराज मुझ को यह समझ पड़ता है कि यह कभी नहीं सम्पूर्ण होने सकेगा क्योंकि मैं जानता हूं कि हिन्दु लोग अपने देवतों की सेवा को परित्याग करके मसीह के मत का ग्रहण कभी नहीं करेंगे।

गुरु। हाँ चेला तुझको ऐसा समझ पड़ता है सही और अन्य अन्य देशोंके मूर्त्ति पूजक लोगों कोभी ऐसा समझपड़ा अब उन्हों ने इसी मतको न जाना था परन्तु कितनेक दिनों के पीछे यूनानी और रूमी और इङ्गलण्ड इत्यादि देशों के लोग अपनी २ जाति के सोना रूपा मिट्टी काठ पत्थर इत्यादि वस्तु करके रची प्रतिमाओंका परित्याग करके ईसा-मसीह के मत को ग्रहण करके सत्य ईश्वर की आराधना के करने हारे हुये।

चेला। हाँ महाराज यह हुआ होगा। परन्तु कि सब हिन्दु लोग जो अपने मतको त्याग करके दूसरे के मत को ग्रहण करें ऐसा तो मुझको नहीं समझ पड़ता। पीछे जो कदाचित् ऐसा होय तो होय तब सो बहुत दिनों के पीछे होगा।

गुरु। यह बात ठीक है परन्तु कि हिन्दु लोग सहज २ से अपना २ मत और शास्त्र को छोड़ करके धर्म पुस्तक के मतके अनुसार से चलें गे इस में कुछ भी सन्देह नहीं है। क्योंकि मुक्तिदाताका वचन

यही है" कि बहुतेरे लोग पूर्व वा पश्चिम देश अर्थात् सब देशों से आय कर स्वर्ग में बसेंगे।" इससे मैं बहुत अच्छे जानने सकता हूं कि सब हिन्दु लोग मसीह के मतके आश्रित होंगे क्योंकि बिना उसमें विश्वास किये कोई स्वर्ग में प्रवेश नहीं जा सकता।

चेला। परन्तु महाराज मैं जानता हूं कि जो कदाचित् हिन्दुओं की बीच में कोई भी अपने मतको छोड़के मसीह के मतको ग्रहण करे तो उसके सब अन्तरङ्ग वा भाई बन्धु लोग उसकी बहुत निन्दा करेंगे।

गुरु। हां चेला यह बात सच्ची है सच्ची क्योंकि मसीह ने आपही अपने शिष्यों से कहा था कि " तुम सब जो हमारे शिष्य हुये हो इस लिये तुम्हारे ज्ञाति भाई सब एवं और २ सब लोग बहुत निन्दा करके तुमको ताड़ना करेंगे और तुम्हारा नाश करने को भी कभी २ इच्छा करेंगे।" और देखो उसके वाक्य के अनुसार से यह सभी सर्वत्र सम्पूर्ण हुआ है।

चेला। भला महाराज वे मुक्तिदाता के शिष्य हुये थे इस लिये लोगों ने क्यों उन की निन्दा किई?

गुरु। इसका कारण मैं कहता हूं सुन। लोग जानते हैं कि उन्हों ने अपने २ अगले पुरखन् के मतका त्याग किया है इस लिये सही परन्तु यह

उसका यथार्थ कारण नहीं है। इसका यथार्थ कारण यही है कि वे धर्मका आचरण कर्ते हैं और मसीहके शिष्य धर्मका आचरण कर्ते हैं। मुक्तिदाताका जो भविष्यवाक्य सुना है उसके विषयमें तू क्या कहता है ?

चेला। महाराज उस वाक्यको सुनके और विचार कर्के यह मुझ को ज्ञान भया कि मुक्तिदाताका जो मत है सो सत्य ?

गुरु। तूने यह भला विचार किया है और इन सब वाक्यों के प्रमाण से मुझको भी यथार्थ ज्ञान होता है कि मुक्तिदाताका मत ही सच्चे ईश्वर का मत है। और आश्चर्य क्रियान् से उसके मतका और २ जो प्रमाण है सो मैं तुझको कहता हूं।

चेला। जैसी आज्ञा महाराज तब कहिये।

पांचवां पर्व।

मसीह की आश्चर्य्य क्रियान् के विषय में।

गुरु। भला चेला यह मैं कहता हूं परन्तु तुझ को पहिले मैं पूछता हूं कि जो आश्चर्य क्रिया सो क्या है यह तू जानता है ?

चेला। हां महाराज यह मैं जानता हूं जिस क्रिया में कुछ भी चमत्कार होय वही आश्चर्य

क्रिया। सो कैसी जैसे नारियल में पानी किस् प्रकार से भया और गर्भ में सन्तान का जन्म कैसे होकर उसके हाथ पांव नाक इत्यादि रचे गये हैं और पेट में किस् प्रकार से वा सजीव होके रहता है इन्हीं सबको आश्चर्य्य क्रिया कहते हैं।

गुरु। यह यथार्थ है सही और ये सब स्वाभाविक आश्चर्य क्रिया हैं परन्तु मैं जिस् आश्चर्य्य क्रिया का प्रस्ताव करूंगा वह स्वाभाविक नहीं है। तू जानता है कि नारियल के फल में पहिले थोड़ा पानी होता है पीछे जैसे जैसे यह फल बढ़ता है तैसे२ उसमें का पानी भी बढ़ता है सो स्वभावके अनुसार से होता है। परन्तु जो कोई मनुष्य दूसरे सेवक को कहे कि इन् छः मटकों को पानी से भरदे, पीछे उसकी आज्ञा के अनुसार से ये सब मटके भरपूर होने सेही जो सारा पानी मदिरा हो जाय यह स्वभाव के वश से नहीं होता परन्तु इसको आश्चर्य्य कहते हैं। ऐसें गर्भ में जो सन्तान जन्मे सोभी स्वभाव के वश से। परन्तु कोई लोग जन्मान्ध होकर जब उसकी ३० बरस अवस्था होय तब किसी मनुष्य के साथ उसकी भेंट होने से वह उसको कहे कि तू आंखों को खोलकर देख। और उसी बात से जो यह अन्धा दृष्टि को पावे और उसके आंखों में और कोई रोग न रहे तब यह स्वभाव के वश से नहीं होवे सके परन्तु यह अद्भुत

क्रिया है ऐसी बऊतेरी आश्चर्य क्रिया मुक्तिदाता से ऊई थी।

चेला। महाराज तब तो उनका प्रस्ताव कीजिये।

गुरु। भला चेला उनको सुन मैं कहता ऊं मुक्ति-दाताने अन्धोंको आंखें बहिरोंको कान वा गूंगे को वाखी लङ्गडेको चलने की शक्ति दिई थी और अनेक भांतिके रोग और पीडा और भूतसे ग्रस्त और मिरगी के रोगी और अर्द्धाङ्ग के रोगी और लूले और कोढी इन् सब पीडित लोगों को उस्के पास लावनेसे उन् सभों को उसने चङ्गा किया। और उस्ने मृतकोंकोभी जिवाया और २ अनेक आश्चर्य काम किया।

चेला। ये सब आश्चर्य्य के काम सचे हैं क्या नहीं महाराज?

गुरु। हां ये सभी सत्य हैं। और यद्यपि अग्निकी उष्णता नष्ट होकर शीतल भी होय तथापि यह मिथ्या नहीं होने सके क्योंकि उस्की ये सब आश्चर्य्य की क्रिया बऊत २ लोगोंने आंखों से देखी थी और उसके शत्रु लोगोंने भी इस्को प्रमाण समझा था।

चेला। ये सब क्रिया उस्ने क्यों किई महाराज?

गुरु। वह जिस् लिये ईश्वर करके प्रेरित ऊआ था और वह आप स्वयं ईश्वर और उसीका मत कि सत्य है इस् सबके प्रमाण के लिये ये सब आश्चर्य्य की क्रिया किई।

चेला। उसके मतसे भिन्न क्या और २ मत सत्य नहीं हैं महाराज?

गुरु। नहीं चेला और २ मत सत्य नहीं हैं क्योंकि उसके मतका जैसा दृढ़ प्रमाण पाया जाता है तैसा और २ मतों का नहीं पाया जाता। और उसके लिये मैं तुझसे कहता हूं कि मुक्तिदाता के मतका जो २ प्रमाण है उसको तू भली प्रकार से विचार करके देख। विशेष से उसके परम पवित्र उपदेश से और उसके भविष्यवाक्य के सम्पूर्ण होनेसे और उसको अद्भुत क्रियाओं से जो २ प्रमाण पाया जाय उसको एक मन होके विचारो। उसमें केवल मुक्तिदाताका मतही यथार्थ है और अन्य २ जो मत हैं वे यथार्थ नहीं हैं यह तुझको समझ पड़े गा। इसीसे यह भी जानेगा कि उसके मतको बिना ग्रहण किये जो २ लोग अन्य २ मतके आश्रय्य में हैं वे मरनेके पीछे नरक में जावें गे इसमें सन्देह नहीं है।

चेला। महाराज मैं देखता हूं कि सभी प्रमाण बड़त दृढ़ हैं। परन्तु मेरी इच्छा है कि उन सब-का विचार करूं?

गुरु। यह बड़त अच्छा है सो तू करेगा क्योंकि भली प्रकारसे खोज नहीं करने से कोई वस्तु सच्ची क्या झूठी यह नहीं जानी जाती है। और जो कोई उसके मतका खोज नहीं करता है वह मनुष्य उसके विषय में ठगाया ड़आ रहेगा। क्योंकि पृथिवी में

को वारम्बार चेष्टा किईथी और एक बेर उन्होंे एक पहाडके ऊपर से फेंक देनेको मनमें ठहराया था परन्तु वह उनके हाथसे भाग गया। और वे उसको झूठ और पाषण्डी वा ईश्वरका निन्दक और शयतान का साथी कहके उसको बहुतेरी अख्याति कर्ने लगे।

चेला। परन्तु महाराज इसमें क्या उनके ऊपर उसको क्रोध नहीं हुआ?

गुरु। नहीं चेला क्योंकि उसने कुछ पाप नहीं किया और उसके मुखमें ठगपनेकी वात नहीं पाई गई और उसने निन्दित होके भी निन्दा नहीं किई और उसने बडी पीडाको पाय करभी दुःख देनेको नहीं धमकाया।

चेला। यह आश्चर्य्य अतुल्य प्रेम है कि ऐसे व्यवहार में भी वह उद्विग्न नहीं हुआ?

गुरु। आहा चेला इन् सब दुःखोंसे भी उसने अधिक दुःख गेथसेमनि में ईश्वरके क्रोधसे भोग किया था। हृदय विदीर्ण होता है जिस् रोदन कर्ने में जो लिखा है सो सुन। "वह बहुत घबराने और अतिकुढने लगा और अपने शिष्योंसे कहा कि मेरा प्राण मरने लों अति दुःखित है।" यह वचन सारा बहुत कठिन है और उसको कैसी चिन्ता कैसा चमत्कार कैसी पीडा और कैसा अन्तःकरण डर प्रगट करे सो समझा जाता नहीं। यही देखो पापके बोझके लिये जिसको उसने अपने पर

उठाया उसके पसीना ईसा बहा जैसे लोहूके बड़े बूंदें जो पृथिवी पर गिरती हैं।" उसके पिताके क्रोधसे उसने ऐसा दुःख पाया। और उसी क्रोधने कितनी तरवारों की तुल्य उसकी आत्माको छेदन किया। इतने दुःख में भी जो उसकी प्रार्थना सो हुए।" हे मेरे पिता यदि होनहार होय तो यह कटोरा "अर्थात् दुःखका भोग" मुझसे बीत जाय तिस पर भी वुह नहीं जो मैं चाहता हूं परन्तु वुह जो तु चाहता है।" जिस समय मनुष्य के पापों के लिये वह दुःखका भोग कर्ता था उसी समय में यहूदी लोगोंने इकट्ठे होके उसको नष्ट कर्ने की परामर्श किया। पीछे इकट्ठे होके कैसें उसका नाश करेंगे यही विचार कर्ने लगे। और उस समय में उसके एक शिष्य के मन में शैयतान ने प्रविष्ट होके ईसा मसीह को ३० तीस रुपैये में उसके शत्रु लोगों को पकड़ावेने को ठहराया। पीछे यह शिष्य अपने सङ्ग में बहुत मनुष्यों को लेकर जिस ठिकाने में ईसा मसीह था वहाँ आयकर पहुंचा तब उसी विश्वास-घातक ने ईसा मसीह को चूमाके द्वारा से पकड़-वाया।

चेला। क्या महाराज मसीह के अपने शिष्यने उससे ऐसी शत्रुता किई?

गुरु। हाँ यह सच है। उसके बारह शिष्योंके बीचमें यहूदा इस्करयूती नाम करके एक शिष्य वि-श्वासघातक था उसने यहूदी लोगों को सिखाय

दिया कि मैं जिसको चूमा करूंगा वह वुही है उसे पकड़ो और चौकसी से लेजाओ। और जोहीं वे आयेऊ थे वह तुरन्त मसीह के समीप जाकर बोला हे गुरुजी हे गुरुजी यही बात कहके उसने उसका चूमा लिया।

चेला। महाराज उन् लोगोंने मसीह को क्या किया?

गुरु। आहा अरे देख उन् पापी लोगोंने ईसा-मसीह को दुःख देनेको कहके और उसको लज्जा देके उसका अपमान कर्नेको कहके क्या निठुर होके उन्होंने उसको अपराधी लोगके ऐसा हाथ बांधे सहित बध कर्नेको मनमें किया था, और उन्होंने उससे बड़त बुरा व्यवहार किया। पीछे वे उसको प्रधान याजक के घरमें लेगये और जिन्होंने ईसाको पकड़ा था उसे ठट्ठेमें उड़ाते ऊये मारने लगा और उसकी आंखें मूंदके उसकी मुंहपर थपेड़ा मारे और यह कहके उससे पूछे कि आगम कह वुह कौन है जिसने तुझे मारा? उन्होंने उसके विरोध में और भी अनेकन् बातें निन्दाकी कहीं।

चेला। मैं यही समझता हूं महाराज कि इन्हीं सबके वारण कर्नेकी चेष्टा पावने को उसके और २ शिष्यों का अवश्य काम था यह उन्होंने क्यों नहीं किया?

गुरु। हाँ चेला यह काम उनको उचित था सही परन्तु वे डरके मारे उसको परित्याग कर्के भाग गये।

चेला। तबतो महाराज मुझको इसमें ज्ञान होता है कि उसके बैरी लोगों ने उसको अकेला देखके बुरा करने में तत्पर हुये।

गुरु। हां चेला सो सच है धर्मपुस्तक में लिखा है "तब प्रधान याजक और प्राचीन और समस्त सभा ईसा पर झूठी साक्षी ढूंढते थे कि उसे मार डालें परन्तु कोई न पाये। हां यद्यपि बहुतेरे झूठे साक्षी आये तथापि वे न पाये अंतमें दो झूठे साक्षी आके। और बोले कि इसने कहा कि मुझमें सामर्थ्य है कि ईश्वर के मंदिरको ढाऊं और उसे तीन दिन में खड़ा करूं।"

चेला। उन्होंने जो प्रमाण दिया महाराज सो क्या वे अप्रमाण कहने सकते हैं?

गुरु। हां सकते हैं क्योंकि ईसाने ऐसी बात कभी नहीं कही। उसने ऐसी सब बातें कही हैं "कि तुम लोग इस मन्दिर को ढादो और तीन दिनमें उसको मैं उठाऊं परन्तु उसने अपने शरीर के मन्दिर के विषयमें कहा अर्थात् तुम सब मुझको बध करोगे परन्तु मैं तीन दिनके बीच में मृतकों में से जी उठूंगा।

चेला। यह बात सुनके महाराज मुझको समझ पड़ता है कि यह भी उसका भविष्यत् वाक्य है?

गुरु। हां चेला इस बातको उसने पहिलेही कहा था और उसके दुःखका भोगके विषय में भविष्यत्

प्राचीनोंने ईसाके विरोध में सभा किई कि उसे मार डालें और जब उन्होंने उसे बांधा तो ले गये और पन्तियूसपिलातूस अध्यक्षको सौम्प दिया।

चेला। महाराज पन्तियूसपिलातूस कौन था?"

गुरु। जिस्ने प्राय दस बरस लग यहूदी लोगों में शामिल किया था। वह एक रूमी स्वामी था।

चेला। महाराज समझ पडता है कि ईसाके ऊपर यहूदी लोगोंने जो दुष्टता किई थी सो अध्यक्षको अपने विचार के द्वारा समझ पडा होगा।

गुरु। हां चेला सो सच है। क्योंकि यहूदी लोगों की जो दुष्टता उस्को अध्यक्ष ने जाना था और ईसाका किछु दोष नहीं था यह भी उस्ने समझा था परन्तु उस्ने केवल डरके मारे क्रूसपर मारने के लिये उसे उन्होंको सौम्प दिया। इस्का सब बर्णन धर्मपुस्तक में है कि "तब ईसा अध्यक्षके आगे खडा था और अध्यक्षने उस्को यह बात कहके पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है? ईसाने उस्को कहा कि तूही कहता है और जब प्रधान याजक और प्राचीन उस्पर दोष दे रहे थे उस्ने कुछ उत्तर नहीं दिया।" "तब पिलातूस ने उस्को कहा क्या तू नहीं सुनता कि वे क्या क्या तुझपर साक्षी देते हैं? परंतु उस्ने एक बचनका भी उस्को उत्तर न दिया यहांलों कि अध्यक्षने बडा आश्चर्य किया। और उस पर्व्वमें अध्यक्ष की रीति थी कि लोगोंके कारण जिसे वे चाहते थे एक बंधुआको

गुरु। क्रूसपर इस प्रकार से बोलते हैं। दो ठौर बडे २ काठ लायकर उनमें एक ठौर काठको खूंटे के समान ऊंचा करके मिट्टीमें गाडे और एक ठौर उसके ऊपर में आडा करके दे। उसका नाम लोगोंने क्रूस रखा है। पीछे जिस मनुष्य को उसपर बध करने होय उसको उठाके उसको दोनो हाथ पसार के उसी ऊपर के काठ से उसके हाथ में कील ठोंक के और इस खूंटे से उसके दोनो पांवमें कील ठोंक के उसको लटकाय देना।

चेला। महाराज उन्होंने जब मसीह को ऐसा दुःख दिया तब क्या उसने उनको स्राप भी नहीं दिया?

गुरु। नहीं चेला उसके मनमें बडी दया थी इस लिये उनके कारण वह प्रार्थना करने लगा "हे पिता जी इन्होंका क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं।"

चेला। उसने कि ऐसी उनके लिये प्रार्थना किई क्या उनका कठोर मन कुछ कोमल नहीं हुआ कि वे ईसा मसीह को छोड देवें?

गुरु। इसमें क्या वे इसको छोड देंगे? वे उसकी और निन्दा करने लगे; ऐसे "और वे जो उधर से आते थे सिर धुन के उसे ठट्ठा करते थे। और कहते थे जो मंदिर का ढानेवाला और तीन दिन में उठावनेवाला आपको बचा यदि तू ईश्वरका पुत्र

क्रूस पर से उतर आ। इसी रीति से प्रधान याजकोंने भी अध्यापकों और प्राचीनोंके संग यह कहके ठट्ठासे कहा। कि इसने औरों को बचाया आपको बचा नहीं सक्ता यदि वुह इसराईलका राजा है वुह क्रूस परसे उतर आवे और हम उस पर विश्वास लावेंगे। उसने ईश्वर पर भरोसा रक्खा था यदि वुह उसका प्यारा है अब वुह उसको छोड़ावे क्योंकि उसने कहा था कि मैं ईश्वरका पुत्र हूं।"

चेला। मैंने समझा महाराज कि तब केवल यहूदी लोगोंने मसीह को सन्ताप देनेके लिये ही मनमें किया था। महाराज क्रूस पर मसीह कितनी घड़ी लटका के रखा था?

गुरु। दो पहर तक मसीह क्रूस पर लटका के रखा था। जिसके बीचमें पिछले एक पहर पर्य्यन्त सारी धरती अंधेरी हो गई थी तब दो पहर से तीसरे पहर तक उस समस्त देश में अंधकार छा गया तब तीसरे पहर के निकट ईसाने ऊंचे शब्द से पुकारके कहा "एली एली लामा सबक्तानी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे छोड़ा है?" उनमें से जो वहां खड़े थे कितनों ने सुनके कहा कि यह इलियासको बुलावता है। और तुरन्त उनमें से एकने दौड़के बादल लेकर सिर केसे भरा और नलपर रखके उसे पीनेको दिया। औरौंने कहा रहने देव हम देखें कि इलियास उसे

छोड़ावने को आवेगा कि नहीं। तब ईसाने दूसरे बेर बड़े शब्दसे चिल्लाके प्राण सौम्प दिया।

चेला। महाराज मसीह के मर्ने पीछे उसका शरीर क्या जलाया गया था?

गुरु। नहीं चेला उसका शरीर जलाया गया नहीं। यह हमने मङ्गल समाचार से जाना है। "तब इसलिये कि वुह बनावटी का समय था यहूदियों ने पिलातूस से चाहा कि उनकी टांगें तोड़ें और उतार लेजांये कि लोथ विश्राम के दिनमें क्रूसपर नरहिजायं क्योंकि वुह बड़ा बिश्राम का दिन था। तब योधाओंने आके पहिले और दूसरे की टांगें तोड़ीं जो उसके साथ क्रूसपर खींचे गये थे। परन्तु जब उन्होंने ईसाके पास आके देखा कि वुह मरचुका है उन्होंने उसकी टांगें न तोड़ीं। परंतु योधाओं में से एकने भलेसे उसका पंजर छेदा और तुरन्त उस्से लोहू और पानी निकला।" "जब सांझ हुई अरमतिया का एक धनमान जिसका नाम यूसफ था वुह भी आप ईसाका शिष्य था आया। और पिलातूस के समीप आकर ईसाका देह मांगा तब पिलातूस ने आज्ञा किई कि उसे दिया जाय। और जब यूसफ ने देहको लिया उसने निर्मल सूती वस्त्रमें लपेटा। और उसे अपनी नई समाधि में रखा जो उसने पत्थर में खोदी थी और वुह एक बड़ा पत्थर समाधि के मुंहपर ढुलकाके चला गया।"

चेला। महाराज ये सब बात उनके मुझे ज्ञान भया कि ईसा मसीह ने वडे भारी दुःखका भोग किया था।

गुरु। हे चेला मसीह ने जो २ दुःख पाया है उस्का थोडासा यह सुना है परंतु उस्ने शरीर के दुःख से बऊत दुःख आत्माके ऊपर सहा था। क्योंकि उस्की आत्मापर से दुःख गये थे सो समुद्र के समान है उस्के आगे जो उस्ने शरीर के दुःख पाये सो केवल एकजलकी बूंदके समान और उस्की आत्माके दुःखके साथ शरीरके दुःख की तुलना देना सो कैसा जैसा लाख मन किसी पदार्थ की तोलके आगे एक छटाँक की तुलना देना। उस्का दुःख अवाच्य और अमिन्न था। तुम्हारे उद्धार कर्नेके लिये ईसा मसीह ने आप इत्ने दुःखको सहन किया था।

चेला। महाराज मैं यही विचारता हूं कि ईसा मसीहने इत्ने दुःख को किस् प्रकार से सहन किया?

गुरु। सुन मैं कहूं जो उस्में ईश्वरत्व नहीं रहता तब वह इतना दुःख नहीं सकता अतएव जो ईश्वर है उसको असाध्य क्या है? तिस् लिये तू देख पापी लोगोंको जो यन्त्रणा यातना नरक में सदा सर्वदा उसके भोग कर्नेको होती उस्को उस्ने अपने शरीर वा आत्मा पर भोग किया यह सहना कुछ छोटा नहीं है।

चेला। परंतु महाराज उसने पापियोंके लिये इतना दुःख का भोग क्यों किया?

गुरु। उसका कारण यही है कि पापि लोगोंपर अपने स्नेहके कारण उसने मनमें किया कि उनका उद्धार होय। परंतु पापके कारण वे सब ईश्वर के पास ऋणी रहे थे इस लिये वह उसकी ओरसे प्रतिभू आप होकर इतने दुःखको सहा। क्योंकि यह नहीं होने से उनको ऋणसे छुटने का और कोई उपाय नहीं था।

चेला। यथार्थ है, महाराज यह उसका बडे आश्चर्य का प्रेम है।

गुरु। हे चेला उसका जो कितना बडा प्रेम सो हमारे ज्ञानका अगम्य है। और उसको भी प्रगट करके कहने की शक्ति नहीं है। धर्मपुस्तक का कहना सुन " जब हम निर्बल थे तब अधर्मियों के कारण ठीक समय में मसीह मूआ। अब ऐसा कोई है जो किसी धर्मीके लिये प्राण देवे और क्या जानें किसी में यह दृढता होय कि किसी उत्तम मनुष्य के लिये प्राण देवे। परंतु ईश्वर ने अपने प्रेम को हमसभों पर ऐसा प्रगट किया कि जब हमलोग पाप करते चले आते थे मसीह हमारे कारण मूआ। सो उसके लोहू से निर्दोषी ठहरके कितना अधिक उसके कारण से क्रोध से बच जायंगे। क्योंकि जो शत्रु होके हम लोग उसके पुत्र की मृत्यु से ईश्वर से मिलाये गये

जो कितना अधिक मिलाया पावे उसके जीवन से
बच जावेंगे।" "ईश्वर ने अपने एक लौता पुत्र को
जगत् में भेजा कि हम सब उसके कारण से जीवें इसमें
हमारे ऊपर ईश्वर का प्रेम प्रगट हुआ है। इसमें
प्रेम है यह नहीं कि हमने ईश्वर को प्रेम किया परन्तु
कि उसने हमें प्रेम किया था और अपने पुत्र को
भेजा कि हमारे पापों का प्रायश्चित्त होवे।" यही जो
ईश्वर का प्रेम है सो अनादि अनन्त और नित्य
है और इसमें जो प्रधानताई है सो ईसामसीह के
द्वारा से तुम्हारे ऊपर प्रगट है। और जो तुम ईसा
मसीह के मरने पर विश्वास लाओ तो उसकी मृत्यु का
जो फल है उसको भी तुम पाओगे। उसकी मृत्यु का
फल यही है कि इस समय में पाप का मोचन और
मन में स्थिरता और पवित्रता इत्यादि होय और
परलोक में नित्य जो सुख सो प्राप्त होय।

चेला। महाराज आपने जो बातें कहीं इनसे मैं
समझता हूं कि मसीह पर विश्वास नहीं लाने से
कोई लोग परित्राण नहीं पाने सकता।

गुरु। यह सत्य है। मसीह पर सारे अन्तःकरण
से विश्वास लाना बड़ा अवश्य है। क्योंकि यह नहीं
होनेसे कोई पापकी क्षमाको नहीं पावने सकता है।
इसीसे चेला तूने भी पाप किया है इसलिये तुझे भी
क्षमा पावनेको अवश्य चाहिये परन्तु इसको तू
मसीह के दुःखमें वा मरण में विश्वास नहीं लाने से
पावने नहीं सकेगा। ईश्वरने अपने पुत्र मसीह के

चेला। परन्तु उस दिनमें क्या उसको किसीने नहीं देखा महाराज?

गुरु। हां चेला उस दिन उसको बज़तों ने देखा था। क्योंकि पहिले उसने एक स्त्री को दर्शन दिया तिस पीछे अपने दो शिष्यों को फेर सब शिष्य एकट्ठा होके दर्शन दिया था। तिसके पीछे चालीस दिन तक पृथिवी में रहा था। इसमें उसके हाथ और पांव में जो कीलके चिह्न थे और पांजर में जो बर्छी का चिह्न था इसको भी उसके शिष्योंने देखा था इसमें उनको बज़त निश्चय ज़आ कि मुक्तिदाता जो क्रूस पर मारा गया था उसीका जी उठना ज़आ है।

चेला। महाराज जी फेर जी उठने के पीछे मुक्तिदाता जिस समय में पृथ्वी में रहा था उसने इतने समय में क्या काम किया था?

गुरु। उसने उतने समय में और भी कुछ अद्भुत काम करके अपने शिष्योंको अपने मतको बज़त २ शिक्षा दिई थी।

चेला। वह किस लिये जी उठा महाराज?

गुरु। हमारे पापके प्रायश्चित्त के लिये उसने अपने प्राणको दिया है फेर पीछे हमको निष्पापी करने के लिये और उस कर्म मनुष्य के पाप छूटने के लिये और कि ईश्वर अत्यन्त बज़त सन्तुष्ट ज़आ था सो प्रगट होनेके लिये और कि जो कोई मुक्तिदाता में विश्वास करे उसको कि ईश्वर क्षमा करता है यह

मनुष्यों को दृढ़ प्रमाण होनेके लिये और उनको भी उठने के विषय में जो भविष्यद्वाक्य उस् कालोंका और र आचार्यों से कहा गया था उसकी सम्पूर्ण होनेके लिये और कि अन्तके दिन में सामर्थ से सब लोगों को शरीर फेर उठेगा इसके भी प्रमाण के लिये उसने आप फेर समाधि से शरीर को उठाया।

चेला। भला महाराज जो मरी देही सडी हो गली होय वा आग में जली होय वह देह फेर कैसे उठने सके?

गुरु। अरे चेला ईश्वर को असाध्य कुछ नहीं है। उसके ज्ञान और पराक्रम से यह हो सकता है। और यही जो काम मनुष्योंको फेर उठाना वह उस्का अवश्य कर्त्तव्य है।

चेला। महाराज यह कर्मोंका तात्पर्य क्या है?

गुरु। इस् कारण कि अन्तके दिन में सब मनुष्य मृत्युसे फेर उठके ईश्वर के सन्मुख ले आवने से उनका यथार्थ रूपसे विचार होगा। पीछे जिस् किसीने मुक्तिदाता में विश्वास करके ईश्वर की आज्ञा को पालन किया वह मनुष्य स्वर्गमें जायके अनन्त सुखका भोग करेगा। परन्तु जिस् किसीने ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार से मुक्तिदाता के मतका आश्रा नहीं रखा है वह अपने कर्मके समान फलको पायके नरक में फेंका जायके अनन्त यन्त्रणा का भोग करेगा। इससे ईश्वर का अतुल्य ज्ञान और शक्ति और

उसके देखने की आशा में खड़े थे। उस् समय में ईश्वर के दो दूतोंने स्वर्गसे उतरके उनको दर्शन देके ऐसे कहा कि हे लोगो तुम सब खड़ेहोके ऊपर स्वर्गके ओर क्यों ताक रहे हो यही ईसा भी तुम्हों से स्वर्गपर उठाया गया है उसी रीति से आवेगा जिस् रीति से तुम लोगोंने उसे स्वर्ग को जाते देखा यह बात सुनके वे यिरोशलीम को फिरे।”

चेला। भला महाराज मुक्तिदाताके स्वर्गारोहण करनेके पहिले अपने शिष्योंको कुछ आज्ञा दिई थी क्या नहीं?

गुरु। हां चेला उसने उन्होंको ऐसी आज्ञा दिई थी कि “तुम् समस्त जगत् में जाओ और हर-एक मनुष्य को मङ्गल समाचार को सुनाओ परन्तु जब तक मैं तुम्हारे पास धर्मात्माको नहीं भेजूं तब तक तुम सब यिरोशलीम में रहो क्योंकि उसी की सहायता से तुम यिरोशलीम और सारी यहूदिया और सामरः में और पृथिवी के अन्त सिवाने लों मेरे साक्षी होओगे।”

चेला। तब महाराज इस् आज्ञाको उसके शिष्योंने पालन किया क्या नहीं?

गुरु। हां चेला उन्होंने इसको भली प्रकार से माना था। और मुक्तिदाता ने भी अपना वचन पालन करनेके लिये स्वर्गारोहण के पीछे दशवें दिन जब उसके शिष्यलोग एक ठिकाने एक सभामें सब इकट्ठे थे तब धर्मात्मा को उनके पास भेज दिया था।

प्रगट किया था और इस मङ्गल समाचार में मुक्तिदाता का जो उपदेश है उस को समाप्त करनेके लिये मुक्तिदाता ने आप उनको ऐसी सामर्थ दिई थी कि उन्होंने बहुत अद्भुत काम किया था।

चेला। ए यह सत्य है परन्तु उन्होंने क्या२ आश्चर्य काम किया था?

गुरु। अब मैं कहता हूं सुन उन्होंने मुक्तिदाता के नामको लेके अनेक दुःखी लोगोंको चंगा किया था। और मृतकों को सजीव किया था और इसी प्रकार से जो और २ बहुतसे आश्चर्य काम उन्होंने किये थे सो सब तुझको मैं कितने कहूंगा ऐसा साव-काश भी मुझको कब होगा?

चेला। भला महाराज यह तो मैं समझा। पीछे आपके पास अब मुझको यही पूछना है कि मुक्ति-दाताने स्वर्गारोहण किस लिये किया?

गुरु। भला चेला अब उसका कारण सुन उसके स्वर्गारोहण के विषय में जो भविष्यद्वाक्य कहा गया था उसके सम्पूर्ण होनेके लिये और उसके शत्रु जिन्से वह पराजित हुआ था यह प्रगट होनेके लिये और उसने अपने पक्षके लोगोंके पक्षमें ईश्वर के स्थान में सहायता करनेके लिये और स्वर्गमें उनके सदन को प्रस्तुत करनेके कारण और अपने ईश्वरदत्त ऐश्वर्य का भोग करनेके कारण उसने स्वर्गमें आरोहण किया।

चेला। वह अपने पक्षके लोगों के लिये किस् प्रकार के सदन को प्रस्तुत करता है महाराज?

गुरु। ऐसे सुन्दर सदन को ठीक करता है कि वह मर्य्यादा का स्थान होवे और जो कोई इसमें बसेगा उस्को कुछ कभी शरीर का कष्ट अथवा मन का दुःख नहीं होगा और उस्को पापभी कभी नहीं छूवने सकेगा और कभी किसी रोगसे उस्को मृत्यु नहीं होगी परन्तु निडर होके वह सदा बड़े सुखसे सदा सर्वदा लों वास करेगा। इसी ठिकाने के विषय में जो बात उस्ने अपने शिष्योंको कही थी सोभी सुन। "मेरे पिता के घरमें बहुत् से सदन हैं नहीं तो मैं तुम्हें कहता। मैं जाता हूं कि तुम सबके लिये मैं स्थान ठीक करूं और जो मैं जाके तुम्हारे लिये सदन को ठीक करूं तब फेर आऊंगा और तुम्हें अपने सङ्ग लेऊंगा कि जिस् ठिकाने में मै बसूं तुमभी उसी ठिकाने में बसो।

चेला। पृथिवी में फेर मुक्तिदाता का आवना महाराज कब होगा?

गुरु। उस्का फेरके आवना पृथिवी में जगत् अन्तके दिनमें होगा। और उसी दिन में उस्के विचार के आसन में बैठने से सब देशके क्या छोटे क्या बड़े लोग उस्के सन्मुख बुलाये जायेंगे और वह यथार्थ रूप से उन् सब के विचार करेगा।

जो श्यतान और उसके दूतों के कारण रचा गया है दूर होओ।" इसी से हे मेरा प्रिय चेला मैं तुझसे कहता हूं कि सावधान होके रहिये नहीं तो पीछे पापके कारण ईश्वर के क्रोध में पड़के सदाको नरक के दुःखको तुझे भोग करने होगा।

चेला। जैसी आज्ञा महाराज की मैं अभी से सावधान होके रहूंगा। परन्तु इसके पहिले जो मुझसे ज्ञान करके वा अज्ञान करके पापोंके पुञ्जके पुञ्ज भये हैं उनकी मोचन करनेके लिये मैं क्या करूंगा उसका उपाय मुझसे कहिये।

गुरु। उसका उपाय यही है चेला कि तू भक्ति करके मुक्तिदाता के आश्रित होय और उसके मतका अवलम्बन करे तो तेरे किये हुवे पाप जितने होंगे वे सब क्षमा किये जायेंगे और तब सर्वदा उसके साथ स्वर्गमें परमानन्द से वास करने सकेगा। परन्तु यह यथार्थ विश्वास किये बिना नहीं हो सकेगा। और इस विश्वास को जब पर्यन्त तेरे अन्तःकरण में ईश्वर नहीं दान देगा तब पर्यन्त तूभी विश्वास को नहीं पावेगा। इस लिये चेला मेरे परामर्श को सुनके मुक्तिदाता के नाम से ईश्वर से इसकी प्रार्थना कर तब इस सत्य विश्वास को वह तेरे अन्तःकरण में दान देगा।

चेला। जैसी आज्ञा महाराज की आपकी आ-ज्ञाके अनुसार से जो काम करो यह मुझको उचित् अवश्य है क्योंकि मैंभी जानता हूं कि मेरे निस्तार

के लिये आपको जैसी चाहिये वैसी बड़ी इच्छा है।

गुरु। हाँ चेला यह ठीक है। ऐसी इच्छा केवल तेरे लिये ही सेरी नहीं है परन्तु सभी लोगों के लिये है। और जो तेरे अन्तःकरण में निस्तार पावनेके विषय में और कुछ पुछनेकी इच्छा उठे तो तू और वेर मेरे पास आइयो मैं अवकाश पाय के अपने भर सक उसका जो उत्तर मुझसे होगा वह कहूंगा।

चेला। जैसा आज्ञा महाराज की तब इस घड़ी बिदा हुआ?

शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
सूचीपत्र	६	मसीहका	मसीहके
समाचार	५	अपना एक लौवा	अपने एक लौके
—	६	को	मिटा दो
—		७०, ७१	—
१	१७	जानना	जानता
—	२०	सनी	सुनो
३	१७	था	था
—	२०	राज	राज्य
—	२१	राज	राज्य
४	१	[illegible]	देख
५	२३	देखा	देखो
८	७	काहिके	कहके
११	११	सम्मुख	सन्मुख
—	१७	जानने	जाने
—	२१	ढूढ़ने	ढूँढ़ने
१२	९	उसन	उसने
—	१९	पाया	पाय
१४	२५	अनुसार	अनुसार
२१	१९	करेगे	करेंगे
२२	१४	दष्टता	दुष्टता
२२	१५	ह	हैं
२३	८	के	को
२४	३	सारी	सारे
—	१८	परन्त	परन्तु
—	—	दष्टान्त	दृष्टान्त
२६	५	चला	चेला

शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९	१	मक्तिदाता	मुक्तिदाता
—	३	केला	चेला
—	८	ह	है
३६	१७	अविक	अधिक
४२	१	दता	देता
४५	४	शक्ता	सक्ता
—	२४	पीनेके	पीनेको
४७	७	से	जो
—	२४	ह	है
४९	१८	पाने	पा
—	२१	पावनेअलाह	पासके
५०	१	ह	है
—	३	ह	है
—	२२	जानमे	जान
५२	१४	ह	है
५४	१७	मत्य	मृत्यु
५६	१०	जानने	जान
५७	४	के	की
५८	५	कियाथा	किईथी
—	६	भया	भई
—	१९	पायेगे	पाओगे
५९	३	दिइ	दिई
—	१५	खगारोहण	खर्गारोहण
६१	३	उसम	उसमें
—	१६	को	के
—	२४	ह	है
६२	४	सेरी	मेरी